बोरसद सत्याग्रह की सामाजिक पृष्ठभूमि का विमर्श

डॉ. राजेश बी. कोठारी
आसिस्टन्ट प्रोफेसर – इतिहास विभाग
सरकारी विनयन कालेज
गांधीनगर – गुजरात

(१) भूमिका

ई.सा. १८५७ से १९४७ पर्यंत भारत मे स्वतंत्रता हेतु तीन बडे आंदोलन हुए । गुजरात में बारडोली सत्याग्रह सन्दर्भ मे देश मे अधिक लिखा जा चुका है । किन्तु स्थानीय सत्याग्रहो के उपलक्ष मे कम लिखा गया है । प्रायः स्थानिय समस्या हेतु हुए सत्याग्रह से ही बडे आंदोलन की पष्ठ भुमि निर्माण होती है । लोकमानस व सक्षम नेतृत्व उजागर होता है । स्थानिक कार्यकर व स्वयंसेवक आंदोलनो के प्राण होते है । स्वयंसेवको व आंदोलन कार्यकरो ऐसे स्थानिक सत्याग्रहो से उजागर होते है ।
महात्मा गांधी की प्रेरणा से देश – विदेश मे सात सत्याग्रह हुए जिनमे (१) दक्षिण अफ्रिका (२) चंपारण्य सत्याग्रह (३) खेडा सत्याग्रह (४) नागपुर फंडा (५) अमदावाद मजदुर सत्याग्रह (६) बारडोली सत्याग्रह (७) बोरसद सत्याग्रह

प्रस्तुत लेख मे गुजरात के खेडा मण्डल के बोरसद सत्याग्रहकी सामाजिक पृष्ठभूमि पर विचार – विमर्श किया गया है । शोधपत्र संरचना मे मुख्य रुप से समकालिन सामयिक व जीवनचरित्रो का व्यापक उपयोग किया है । गुजरात मे बोरसद के अतिरिकत महात्मा गांधी प्रेरित अन्य सत्याग्रहो की श्रेणी हे। जिस मे सरदार वल्लभभाई पटेलने प्रत्यक्ष नेतृत्व दिया और सफल बनाया । ऐसे सत्याग्रगो मे सुरत एवं खेडा मण्डल अग्रण्य रहा ।

(२) बोरसद का संक्षिप्त परिचय

बोरसद की भोगोलिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखे तो यह गुजरात राज्य के आणंद जिल्ले मे तहसिल है । बोरसद २२-२५ उत्तर अक्षांश एवं ७२-५६ पूर्व रेखांश मे स्थित है । ४९४ कि.मि विस्तृत है । बोरसद तहसिल मे ९६ गाँव है । [१] बोरसद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ईसा पूर्व ४ सदी प्रचीनतम है । अंग्रेजोने १८१७ मे मराठाओ सेल हस्तगत किया । बोरसद में १९२३ सत्याग्रह के समय में डेढ लाख की जनसंख्या थी । कुल जनसंख्या मे से आधी संख्या बारेया – पाटणवाडीया जाति की थी । मही नदी के पूर्व एवं दक्षिण सीमा मे बारैया – पाटणवाडीया जाति की संख्या ज्यादातर थी । मुसलमानो की तृतीयांश भाग से ज्यादा जन संख्याथी । [२] बोरसद मे ज्यादातर पिछडी व वंचित प्रजा थी । आर्थिक दृष्टि से निम्नस्तर की प्राजा मे जिवननिर्वाह के मर्यादित संशाधन थे । अतः इस क्षेत्र चोरी, डकेती प्रभावित विस्तार हुआ करता था ।

(३) बोरसद सत्याग्रह के मूलकारण

लोगो मे असंतोष की सीमा बठने पर संघर्ष व सत्याग्रह जनित होती है । ठीक वैसे ही बोरसद मे हुआ । उकत सत्याग्रह मे राजकिय, सामाजीक एवं आर्थिक कारणो की भूमिका तो थी ही । अवान्तर कारणो मे प्रजा मे एक समस्या मुलय कारण था । समस्याओं के समाधान के प्रयास मे सत्याग्रह जनित हुआ ।

इ.स १९२३ मे सरदार पटेल के मार्गदर्शन मे २ डिसम्बर १९२३ से ८ जनवरी १९२४ तक ३८ दिनो तक सत्याग्रह चला । उकत सत्याग्रह का मूलकारण था की बारैया एवं पाटणवाडिया जाति के डकेतो से त्रस्त प्रजा के संरक्षण हेतु मे रखी गई पुलिस का व्यय एवं आमदनी के लिए अंग्रजो ने दंड वसूली रखी थी । जिसका व्यापक विरोध हुआ ।

(१) बारैया एवं पाटणवाडिया जाति के लोग डकेत. बनने के पीछे सामाजिक एवं राजकिय परिस्थति प्रभावक थी । अन्य जाति के उपेक्षित व तिरस्कृत व्यवहार से प्रभावित थे । सरकारी दकतर मे 'गुन्हेगार जाति' के नाम से उल्लेख किया जा रहा था । उकत जाति पुख्त वयस्क के लोगो को प्रतिदिन थाने मे उपस्थिति दर्ज करानी पडती थी । कलंक के निर्मूलन एवं अपनो की क्षत्रीय 'ठाकुर' गणना की फांखना थी ।[३] उस परिप्रेक्ष्य मे सत्याग्रह के मूलकारण की संभावना प्रतीत होती है ।

(२) इस क्षेत्र की भौगोलिक रचना भी डकेतो को लाभ पहोचाने वाली थी । यहाँ वात्रक, मही नही के कोतर मे आश्रय लिया जा सकता था । डकेतो की श्रेणि मे बाबर देवा, अलियो, डाभलो, डाह्यो बारैया, नामदरिया आदि प्रमुख थे ।[४]

(३) डकेतो से सुरक्षा हेतु एवं जान-माल रक्षा हेतु खेडा मण्डल मे कुल ४०० अतिरिक्त पुलिस के व्यवस्था एवं खर्च के लिए लोगो पे कर डाला गया । बोरसद तहसिल के ९० गाँव एवं आणंद तहसिल के १४ गाँव जोडकर कुल १०४ गाँवो पर कर डाला गया ।[५] उस कर का 'हैडिया वेरो' नाम दीया गया। कारण यह था की प्रति व्यक्ति पुख्त वयस्क स्त्री – पुरुष से २-७-० कर प्राप्त करना था ।[६] अंततोगत्वा प्रतिवर्ष होने वाले ढाँई लाख खर्च वसुला जा सके ।

(४)डकेतों को पकडने मे असमर्थ सरकार प्रजाको ही जिम्मेदार बताने लगी । प्रजा के लिए केवल पैसो की बात नही थी किन्तु सरकार अपने ना कामयाब प्रयत्न को ठकने के लिए प्रजा को दोषित मान रही थी और प्रजा से डीलीट दंड के रुप मे कर लिया जा रहा था ।[७] सैद्धान्तिक रुप से ये अन्यायी नीति ने सत्याग्रह की नींव रखी ।

(५) सरकारी नोकर, पादरी , गाँव के मुख्या को दंड कर से मुक्ति दी गई थी । सरकार की भेदभाव वाली नीति वाली नीति से प्रजा मे व्यापक असंतोष खडा हुआ ।[८]

(६) अकाल प्रभाव जैसी विषम परिस्थिति मे सरकारने कर डालकर मुश्किल हालात को और मुश्किल किया । ऐसी परिस्थिति मे सत्याग्रह करके दंड रद करवाना यही एक मार्ग या उपाय था । उक्त सत्याग्रह की मे सामाजिक, राजकीय, आर्थिक कारण प्रमुख रुप से थे ।

(४) बोरसद सत्याग्रह का आयोजन

सरदार पटेल को खेडा सत्याग्रह का पूर्व अनुभव था । रविशंकर महाराज और मोहनलाल पंड्या को गाँव मे जाकर गाँवो की वास्तविक स्थिति एवं प्रजा के सहयोग की संभावना इत्यादि विषयो को सही जानने – पहचान करने हेतु भेजा गया । प्रजा संपूर्णतया साथ थी । सरदार ने कहा – कर का कोई सवाल नही है । सवाल दंड के रुप मे देने का है । अगर सरकार अक्षम है तो कबुल करने पर व्यवस्थापन की हमारी तत्परता है । यह विधान का व्यापक प्रभाव हुआ और प्रजा एक साथ जुड गई। दिनांक १-१२-२३ के रोज प्रांतिय समिति मे घोषणा करके सरदार पटेल के नेतृत्व मे छोटे – छोटे समूहो बनाकर संघर्ष समिति का गठन हुआ । (९,१०,११)

(५) बोरसद सत्याग्रह की प्रमुख घटनाए

प्रांतिय समिति की घोषणा के साथ ही बोरसद मे सत्याग्रह का प्रारंभ हुआ । सरकारी अफसर सामान्य दंड वसुल करने के बदले मे किंमति चीजे, जान-माल, जबरन जप्त करलेते थे । जेलो मे लोगो को डाल देते थे ।

सरदार पटेलने सत्याग्रह आंदोलन मे विविध ज्ञातिसमूहो का योगदान लिया, ब्राह्मण,पटेल, क्षत्रिय, पिछडे वर्गो के लोगो को संगठित करके लोगो को सूचित किया की सरकार द्वारा जबरन ले गई चिजे कोई खरीद न करे । अगर कोई खरीदता है तो उसे ज्ञाति से दूर करके पचास रुपये का जुर्माना करके दंडित करने का फरमान किया (१२)

उपर्युक्त ठराव करने वाली ज्ञातिओ मे पुसा श्रीमाळी, जैन दिगम्बर, परमार ज्ञाति, भंगी ज्ञाति, आदि ने विविध प्रकारके कार्यक्रम बनाये औऱ नियम बनाये । नियम तोडने पर ज्ञातिसमूहों से दूर करना औऱ जुर्माना देने की योजना बनाई । (१३-१६)

बोरसद सत्याग्रह मे सरदार पटेल ने अलिया डकेतो और सरकार के बीच हुए दोस्तीके करार को प्रसिद्ध किया और सार्वजनिक किया जिसे सरकार अलियो डकेतो के साथ मिलि होने पर उन्हे गिरफतार नही करती यह स्पष्ट हुआ । महादेव देसाईने उक्त करार का अंग्रेजी अनुवाद किया औऱ युरोप भेजा । ३ Yong india ” (यंग इन्डिया) मे करार दीसम्बर मे प्रसिद्ध हुआ । जिसे सत्याग्रह गुजरात मे ही नही अपितु पुरे देश मे ख्यात हुआ । प्रजा के सहयोग से सत्याग्रह सफल रहा । कर लेने की सरकार की योजना विफल रही २.५० लाख की वसुली पर मात्र ९०० रुपये ही मिले । और जबरन ले गई चीज को खरीदने वाला कोई नही था । केवल २०,००० की ही चीजे बीकी । जो खर्च से भी काफी कम लागत थी ।(१७)

(६) सरकार की प्रतिक्रिया

सरकार द्वारा बोरसद सत्याग्रह को विफल बनाने का प्रयास किया गया । प्रारंभ से ही सख्ती बरती जा रहीथी महेसुल एवं पुलिस विभाग के सभी कर्मीओ को कर वसुली और मालसामान जप्त करने को लगाया था । विविध युक्ति – प्रयुक्ति का आधार बनाकर व डरा धमकाकर सत्याग्रह को विफल बनाने का अथाक परिश्रम किया गया । यहां तक की नमाज अदा करने के समये घर में घुसकर जान-माल

उठालेने का उपक्रम हुआ। उतना ही न ही तोड फोड करना, समजाना, युक्ति – प्रयुक्ति करना किन्तु सरकार बोरसद मे दंड वसुल कर को संग्रहित करने मे सर्वथा विफल रही । पीदटीप [१८ - २३]

(७) सत्याग्रह का परिणाम

कम समयावधि वाले सत्याग्रह का परिणाम यह हुआ कि होम मेम्बर सर मोरिस हेवर्ड ने संपूर्ण रुप से जसी बंद करवाई एवं सुरक्षा कर्मीओ का खर्च प्रजा से वसुलने का निर्णय हटा लिया ।

दिनांक ८-१-१९२४ को घोषित किया गया कि – कर वापस लिया गया है । और जो दंड लिया गया है वह वापस दिया जाता है । प्रमुख डकेत – बाबर देवा, अलियो, दाभलो, डाहयो, राजलो इत्यादि को पकडकर जेल मे डाल दीया गया । सन् १९२४ के शुरु मे अलियाँ को और अंत मे बाबर देवा को फांसी दी गई ।

बारैया और पाटणवाडीया कोमो के पुख्त वयस्क लोगो को थाने मे प्रतिदिन उपस्थिति दर्ज करानी पडती थी । जो रविशंकर महाराज के प्रयत्न से उस से मुक्त हुए और गौरवपूर्ण स्थान दिया गया ।[२४-२५]

(८) बोरसद सत्याग्रह की समीक्षा

प्रायः संघर्ष या सत्याग्रह अन्याय, शोसण, या दमन के विरुध मे होते है । बोरसद सत्याग्रह भी एक अन्यायी व्यावस्था के खिलाफ था । कम समयावधि तक चलने वाला सफल सत्याग्रह था । सरकार ने स्वयं अपनी भूल का स्वीकार किया । यह प्रथम प्रसंग था जिसमे सरकार ने निःसंकोच अपनी भूल कबुल की हो और सत्याग्रह 'राजमान्य' प्रजाकीय संघर्ष है ऐसा स्वीकृत किया ।[२६] महात्मा गांधी उक्त 'सत्याग्रह' मे प्रत्यक्ष रुप से जुडे नही थे । किन्तु गांधीजी के आदर्शो, सिद्धांतो से प्रेरणा मिलति थी । बोरसद के सत्याग्रह मे प्रजा के साथ साथ सक्षम नेतृत्व भी मिला ।

पादनोंद

१ धीरुभाई ठाकर – संपादक, गुजराती विश्वकोश, खंड – १४, अमदावाद २००१, पृ. ५१ – ५२.
२ रावजीभाई म. पटेल, जीवनना झरणां, अमदावाद, १९४५, पृ.१९७.
३ राजमोहन गांधी, सरदार पटेल एक समर्पित जीवन, अमदावाद, पृ.११९-१२०
४ रावजीभाई म. पटेल, पूर्वोकत, पृ.१८५-१८६
५ जीवणजी ठाकर, बोरसद नो इतिहास, अमदावाद, पृ. ४५
६ मगनभाई आर. पटेल, इतिहास विश्लेषण, वल्लभविद्यानगर, मार्च १९९३, पृ. ९८.
७ रावजीभाई म. पटेल, पूर्वोकत, पृ.१८९
८ रतुभाई अदाणी, पूर्वोकत, पृ. ८२
९ राजमोहन गांधी, पूर्वोकत, पृ. १२०
१० अेजन
११ रावजीभाई म. पटेल, पूर्वोकत, पृ. १८९
१२ नवजीवन ९ डीसे., १९२३ पृ १२०
१३ शि.गो.पटेल, बोरसद सत्याग्रह, माहिती खातु, गुजरात राज्य, पृ. २३–२४

१४ नवजीवन वधारो, अमदावाद, डीसे. १९२३, पृ. ८
१५ शी.गो. पटेल., पूर्वोकत, पृ. २५
१६ नवजीवन वधारो, अमदावाद, डीसे., १९२३, पृ. ८
१७ धीरुभाई ठाकर – संपादक, पूर्वोकत, पृ. ५१ – ५२
१८ नवजीवन अंक – २०, पु.प, अमदावाद, १३ जान्युआरी १९२४
१९ शी.गो. पटेल, पूर्वोकत, पृ २६
२० नवजीवन अंक – २०, पु ५, अमदावाद ९ डीसे. १९२३, पृ १२०
२१ नवजीवन वधारो, अमदावाद ५ डिसे. १९२३ पृ. ७
२२ नवजीवन वधारो, अमदावाद ५ डिसे. १९२३स पृ. ७-८
२३ अेजन, पृ १३६
२४ जीवणजी ठाकर, पूर्वोक्त, पृ. ५१
२५ नवजीवन वधारो, अमदावाद, डीसे. १९२३, पृ. ८
२६ नवजीवन, अंक – २०, अमदावाद, १३ जान्युआरी १९२४, पृ. १५३